कुएँ का मेंढक

समुद्र से कुछ दूर कुएँ में एक बड़ा काला मेंढक रहता था । उसका जन्म वहीं हुआ था । वह एक दिन भी बाहर नहीं निकला था । उसे बाहरी दुनिया का कोई ज्ञान नहीं था, पर स्वयं को सबसे अधिक होशियार समझता था । वह कुएँ में पड़े कीट-पतंगों को खा-खाकर मोटा-ताजा हो गया था ।

एक दिन जब वह दोपहर में ऊँघ रहा था, तो समुद्र का एक मेंढक धड़ाम से कुएँ में आ गिरा । उसने सोचा- "कोई बड़ा-सा कीड़ा आ गिरा है" और उसकी ओर लपका।

जब उसने दुबारा देखा तो आश्चर्यचकित होकर मन-ही-मन कहने लगा- "यह तो मेंढक लगता है, पर मेरे जैसा काला नहीं ?" अपने भय को छिपाते हुए वह गंभीरता से बोला, "हे भाई ! तुम कौन हो ?"

समुद्र के मेंढक ने उत्तर दिया- "मैं एक परदेशी हूँ ।"

"हाँ ! हाँ ! मुझे पता है, परन्तु तुम्हें यहाँ क्या काम है ?"

"सुनो भाई, मेरी यहाँ आने की कोई इच्छा नहीं थी, मैं अनायास ही गिर पड़ा, पर मुझे आपसे मिलकर बड़ी प्रसन्नता हुई ।"

हमारे कुएँ वाले मेंढक जी उत्तर से संतु-ट हुए, पर आगंतुक के बारे में और जानकारी प्राप्त करना चाहते थे ।

"तुम कहाँ से आए हो ?"

"मैं समुद्र से आया हूँ ।"

"समुद्र ! यह क्या बला है, कितना बड़ा है ? क्या मेरे कुएँ के बराबर है ?" एक ओर से दूसरी ओर कूदते हुए पूछा ।

"मेरे भाई," दूसरे ने मुस्कराते हुए कहा, "तुम समुद्र की तुलना अपने इस छोटे-से कुएँ से कैसे कर सकते हो ?"

हमारे मेंढक ने एक छलांग लगाई और पूछा, "क्या तुम्हारा समुद्र इतना बड़ा है ?"

"क्या बकवास करते हो ! तुम्हारे कुएँ और समुद्र की कोई बराबरी नहीं । समुद्र तो तुम्हारे कुएँ से लाखों गुणा बड़ा है ।"

"नहीं, मेरे कुएँ से और बड़ा हो नहीं सकता । तुम झूठे हो । मैं तुम्हारी बात नहीं मानता ।"

"क्योंकि तुमने कभी समुद्र को नहीं देखा । आओ मेरे साथ, मैं तुम्हें समुद्र दिखाता हूँ, फिर तुम्हें असलियत का पता चलेगा ।"

"सचमुच, मैं तुम्हारे साथ नहीं जाऊँगा । तुम ईमानदार नहीं हो सकते, या तुम मुझसे असहमत नहीं होते । अब आप कृपया यहाँ से चले जाएँ ।"

समुद्र के ज्ञानी मेंढक ने सोचा कि इस मूर्ख से बहस करने में कोई लाभ नहीं है, और वह वापस चला गया ।

हमारे मेंढक जी बड़े प्रसन्न हुए और हँसकर बोले, "बड़ा आया ! सोचता था कि मुझे बेवकूफ बनायेगा । मेरे कुएँ से कुछ बड़ा हो ही नहीं सकता ।" और फिर कुएँ के एक कोने से दूसरे कोने में कूद गया ।

शिक्षा: हमें दूसरों के प्रति "कुएँ का मेंढक" जैसी भावना नहीं रखनी चाहिए। दूसरों की बातों को समझना और सराहना चाहिए । यही हमारी संस्कृति का प्रतीक है ।

संग्रहकर्त्ता:-
पंकज कुमार
ए ए आर,एस टी डी ग्रुप
मानकीकरण निदेशालय

अनिश्चितता से निश्चितता बेहतर है

राज्य में चोरों ने उत्पात मचा रखा था । कौशल नरेश ने समाचार सुना तो वे आग-बबूला होकर स्वयं एक बड़ी सेना साथ लेकर तस्करों का दमन करने के लिए निकल पड़े ।

मंत्री ने समझाया-राजन्, शत्रु अपने राज्य पर आंख लगाये हुए हैं । राजधानी की रक्षा आवश्यक है । इस घोर व-र्ा के दिनों में रास्ते रूक जाने से चोरों का दमन भी सम्भव न होगा और दुर्ग भी अरक्षित रह जायगा, सो निश्चित को संकट में डाल अनिश्चित के लिए दौड़ना ठीक न होगा ।

राजा ने उस सलाह पर ध्यान नहीं दिया और सेना समेत कूच कर गए । कुछ दूर जाने पर घोर व-र्ा के कारण सर्वत्र जल भर गया और वे एक भूखण्ड में घिरे हुए रह गये ।

घोड़ों को दाना दिया गया था । पेड़ पर से एक बन्दर उतरा । उसने दाने में से मुट्ठी भरी और ऊँची ठहनी पर बैठ कर खाने लगा । मंत्री और राजा यह कौतूहल देख रहे थे ।

कौतूहल और भी बढ़ गया जब बन्दर की मुट्ठी में से एक दाना गिरा और वह उसे पाने के लिए आतुर हो उठा । बन्दर का आवेश इतना बढ़ा कि उसने मुट्ठी के दाने फेंक दिये और नीचे उतर कर उस गिरे हुए दाने को ढूँढ़ने लगा । बहुत प्रयत्न करने पर भी वह मिला नहीं । मुट्ठी के दाने भी चले गये । इस दुहरी हानि से बन्दर दुखी व निराश होकर मुँह लटकाये हुए एक सूखी डाली पर बैठा जम्हाई लेने लगा ।

राजा और मंत्री इस दृश्य को देख रहे थे । स्तब्धता को चीरते हुए धीमे स्वर से मंत्री ने प्रश्न किया - राजन्, अनिश्चित को प्राप्त करने के लिए निश्चित को छोड़ने में इस बन्दर ने क्या बुद्धिमानी की ?

प्रश्न बड़ा जटिल था । राजा विचारों में खो गया । राजधानी की रक्षा और जीवन सम्पदा की व्यवस्था के दोनों ही 'निश्चित' उसे अधिक महत्वपूर्ण प्रतीत हुए - सो रास्ता खुलते ही सेना को वापिस लौट चलने का आदेश दिया गया ।

बन्दर की तरह - कौशल नरेश की तरह हम भी जीवन तथ्य के निश्चित से पराङ्मुख होकर उस अनिश्चित के पीछे भटकते हैं जिसके मिलने और टिकने की सम्भावना कम ही रहती है ।

संग्रहकर्त्ताः-
पंकज कुमार
ए ए आर,एस टी डी ग्रुप
मानकीकरण निदेशालय

नीच और ऊँच की पहचान

रूस के राजा एलेक्जेण्डर अक्सर अपने देश की आन्तरिक दशा जानने के लिए वेश बदल कर पैदल घूमने आया करते थे । एक दिन घूमते-घूमते एक नगर में पहुँचे, वहाँ का रास्ता उन्हें मालूम न था । राजा रास्ता पूछने के लिए किसी व्यक्ति की तलाश में आगे बढ़े।

आगे उन्होंने एक हवलदार को सरकारी वर्दी पहने हुए देखा । राजा ने उसके पास जाकर पूछा - "महाशय, अमुक स्थान पर जाने का रास्ता बता दीजिए ।" हवलदार ने अकड़ कर कहा - "मुर्ख ! तू देखता नहीं, मैं सरकारी हाकिम हूँ, मेरा काम रास्ता बताना नहीं है। चल हट, किसी दूसरे से पूछ ।" राजा ने नम्रता से पूछा - "महोदय, यदि सरकारी आदमी भी किसी यात्री को रास्ता बता दें तो कोई हर्ज थोड़ा ही है । खैर, मैं किसी दूसरे से पूछ लूँगा, पर इतना तो बता दीजिए कि आप किस पद पर काम करते हैं ?"

हवलदार ने और भी ऐंठते हुए कहा - "अन्धा है क्या ? मेरी वर्दी को देखकर पहचानता नहीं कि मैं कौन हूँ ।" एलेक्जेण्डर ने कहा - "शायद आप पुलिस के सिपाही हैं।" उसने कहा- "नहीं उससे ऊँचा ।"

राजा - "तब क्या नायक हैं ?"

हवलदार - "उससे भी ऊँचा ।"

राजा - "हवलदार हैं ?"

हवलदार - "हाँ, अब तू जान गया कि मैं कौन हूँ, पर यह तो बता कि इतनी पूछताछ करने का तेरा क्या मतलब ? और तू कौन है ?"

राजा ने कहा - "मैं भी सरकारी आदमी हूँ ।"सिपाही की ऐंठ कुछ कम हुई, उसने पूछा, "क्या तुम नायक हो ?"

राजा ने कहा - "नहीं उससे ऊँचा ।"

हवलदार - "तब क्या आप हवलदार हैं ?"

राजा - "उससे भी ऊँचा ।"

हवलदार - "दरोगा ?"

राजा - "उससे भी ऊँचा ।"

हवलदार - "कप्तान ?"

राजा - "उससे भी ऊँचा ।"

हवलदार - "सूबेदार ?"

राजा - "उससे भी ऊँचा ।"

अब तो हवलदार घबराने लगा, उसने पूछा - "तब आप मंत्री जी हैं ?" राजा ने कहा "भाई बस एक सीढ़ी और बाकी रह गई है ।" सिपाही ने गौर से देखा तो सादा पोशाक में बादशाह एलेक्जेण्डर सामने खड़े हैं । हवलदार के होश उड़ गये, वह गिड़गिड़ाता हुआ बादशाह के पांवों पर गिर पड़ा और बड़ी दीनता से अपने अपराध की माफी माँगने लगा ।

राजा ने कहा - "माफी माँगने की कोई बात नहीं है । मैं जानता हूँ कि जो जितने नीचे हैं, वह उतने ही अकड़ते हैं । जब तुम बड़े बनोगे तो मेरी तरह तुम भी नम्रता का बर्ताव सीखोगे ।" जो जितना ही ऊँचा है वह उतना ही सहनशील एवं नम्र होता है और जो जितना नीच एवं ओछा होता है, वह उतना ही ऐंठा रहता है ।

संग्रहकर्त्ताः-
पंकज कुमार
ए ए आर,एस टी डी ग्रुप
मानकीकरण निदेशालय